SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"वर्तमान समाज में महिलाओं की भौतिक एवं व्यावहारिक स्थिति"

अर्चना पांडेय
शोधार्थिनी, शिक्षाशास्त्र
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

डॉ. शोभा गिल
शोध पर्यवेक्षिका
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

सारांषिका :

भारतीय समाज हमेशा से पुरुष प्रधान परम्परा वाला रहा है। अतः पितृसत्तात्मकता के चलते पुरुषों के द्वारा (नारी) महिलाओं को निम्न वर्ग का समझा जाने लगा है परन्तु समय के साथ महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन होने लगा है। महिलाऐं आज अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो रही हैं। शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ नौकरी, व्यवसाय एवं अपना जीवन साथी चुनने के अलावा समाज की पारम्परिक भूमिका को स्वीकार नहीं कर रही है। इसी कारण से उन्हें पुरुष प्रधान समाज के हमलों को क्षेलना पड़ता है, कई बार ये हमले परिवार की तरह से भी होते हैं। लेकिन वर्तमान भरातीय समाज धीरे–धीरे पुरानी परम्परा, जाति, लिंग भेद की ओर अपना रूख कर रहा है। आज औरतों पर हमले के पीदे पुरुष प्रधान मानसिकता है, हमारे समाज में और राजनीति में हमेशा पुरुषों का वर्चस्व रहा है। इसका आशय यह है कि वर्तमान ाारतीय महिलाऐं आधुनिक समाज को लैंगिक न्याय की चुनौती दे रहे है और देश के विकास के लिए हर क्षेत्र में अपपी उपस्थिति दर्ज करा रही है।

प्रस्तावना–

भारतीय समाज का मुख्य हिस्सा महिलाएं हैं। महिलाओं के बिना घर– परिवार, सामाजिक रीति–रिवाज, धार्मिक–अनुष्ठान एवं भारत विकास की कलपना नहीं की जा सकती। महिलाएं

समाज की धुरी है। जिसके इर्द–गिर्द उन्नतशील समाज घूमता रहता है। परन्तु पुरुष प्रधान समाज यह नहीं समझता है कि महिलाओं की भूमिका समाज को मूर्त रूप देने में कितनी महत्वपूर्ण है। समाज में सामाजिक मूल्य और राजनीतिक सोच सभी अवधारणायें पुरुष प्रधान मानकिसता को ही प्रदर्शित करती है। इसलिए समाज में महिलाओं की परिस्थिति को सम्मानजनक रूप प्रदान नहीं किया गया एवं उसको हर हालज में किसी न किसी के अधीन रहना पड़ा है। पुरुष प्रधान समाज में महिला बाल्यावस्था में पिता के संरक्षण में तथा विवाह उपरान्त पति के अधीन रहना और वृद्धावस्था में बेटे के सहारे जीवन व्यतीत करना।" इन तीनों अवस्थाओं के रहते महिलाओं की व्यक्तिगत निजी सोच विकसित नहीं हो पायी। समाज के सभी फैसले पुरुष मानसिकता से ग्रसित होते हैं और समाज की दिशा और दशा पुरुष प्रधान मानसिकता के इर्द–गिर्द घूमती है। आज सभी जगह महिलाओं के साथ भेदभाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। घर हो या बाहर महिलायें अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है। पुरुषों की संकीर्ण मानसिकता के रहते महिला हिंसात्मक घटनाओं की शिकार हो रही हैं। परन्तु इन परिस्थितियों से महिलाएं आज जूझते हुए अपने अधिकारों को समझ रही हैं और अपने साथ हो रहे अपराधों के खिलाफ आवाज भी उठा रही है।

महिलाएं कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए भी प्रत्येक क्षेत्र में बढ़–चढ़ कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करा रही है। बड़े शहरों में कामकाजी महिलाओं की संख्या अधिक है, पर वे वहाँ भी सुरक्षित महसूस नहीं करती हैं। "पिछले दो दशकों में स्थिति बेहद खराब हो गई है। कम उम्र की महिलाओं का यहाँ मजाक उड़ाया जाता है और उनके खिलाफ दुराचार की हिंसा को अंजाम दिया जाता है। पंद्रह से तीस के बीच की किशोरियों और महिलाओ को इसका सामना ज्यादा करना पड़ता है, पर इसका मतजब यह नहीं कि इससे अधिक कम उम्र की महिलाएं और बच्चियाँ सुरक्षित हैं।" आज कल स्कूल एवं स्कूल वैन में छोटी–छोटी बच्चियों के साथ दुराचार की घटनाओं को खुलेआम अंजाम दिया जाता है।"[1]

महिलाओं के लिए बड़े शहरों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति बेहतर नहीं है। वहाँ पर पुरुष प्रधानता के चलते महिलाओं को पुराने रीति–रिवाजों, पर्दा–प्रथा जैसे कायदे–कानूनों के जरिये उन्हें दबाया जाता है। कुप्रथा के चलते कन्या भ्रूण हत्या एवं बड़े होने पर स्कूल जाने पर प्रतिबन्ध महिलाओं के बाहर काम करने पर रोक अपना जीवन साथी चुनने पर प्रतिबन्ध आदि पुरुष संर्कीर्ण मानसिकता को दर्शाता है। अतः भारतीय समाज में महिलाओं को पुरुषों के बराबरी का दर्जा नहीं दिया जाता है। उनके साथ भेदभाव की स्थिति विद्यमान है।

स्माज की कुप्रथाओं को पीछे छोड़ते हुए वर्तमान में ग्रामीण भारतीय महिलायें स्वावलंबन की ओर अग्रसर हो रही हैं। वे हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और क्षमता के बल पर पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। पिछले कुछ वर्षों के आंकड़े बताते हैं कि भारतीय हिलाओं ने समाज में अपनी प्रतिभा दिखाकर नई पहचान बना ली है। राजनीति, खेल, शिक्षा, उद्यम, व्यापार सेवा के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ती जा रही है।[2] महिलाओं की इच्छा–शक्ति, कठोर परिश्रम और लगनशीलता ही है कि आज शहरी महिलाओं के साथ–साथ ग्रामीण महिलाऐं भी अपने पैरों पर खड़ी होकर जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रही है तथा घर की रसोई से लेकर देश, प्रदेष, समाज के सतत् विकास में हाथ बंटा रही है सामाजिक स्तर पर भी महिलाओं के लिए किए जा रहे प्रयासों से सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। देश में महिला सशक्तिकरण के लिए जन अभियान परिषद द्वारा गठित प्रस्फुटन समितियाँ व स्वयंसेवी संस्थाएं प्रयासरत् हैं और तो और महिलाओं का सर्वांगीण सशक्तिकरण बेहतर तथा अधिक न्यायपूर्ण समाज निर्माण का अनिवार्य एवं आंतरिक भाग है। हमारे देश में 30 करोड़ ग्रामीण श्रमशक्ति का 73 प्रतिशत हिस्सा आज भी कृषि पर आधारित है।[3]

महिलाएं समाज की महत्वपूर्ण इकई है, महिलाएं पुरुषों की अर्धागिनी होने के साथ–साथ प्रेरणा स्त्रोत भी होती है। हमारा समाज महिला एवं पुरुष दोनों से मिलकर बना है। महिला पुरुष के विसा में सहयोग प्रदान करती है। इसलिए उन्हें पुरुषों के द्वार मान सम्मान दिया जाना चाहिए न कि उनका तिराकार करना चाहिए। वर्तमान समाज में आज की पविर्तित परिस्थितियों में महिलाओं की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आज पुरुष प्रधान समाज में वह अपने बलबूते अपनी पहचान बना रही है।

निष्कर्ष–

वर्तमान में महिलाएं पुरुष वादी सोच को नकारते हुए अपने अधिकारें के प्रति जागरुक हो रही है और समाज एवं देश के विकास में अपनी सहभागिता दर्ज करा रही है। महिलाऐं शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है। पुरुष प्रधान समाज के द्वारा प्रताड़ित किये जाने के बाद भी महिलाएं विकास के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हैं।

सुझाव :–

1. महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता लानी होगी।

2. पुरुष की मानसिक संकीर्ण सोच को बदलना होगा।
3. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में पलायन भी महिला विकास में बाधक है।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के साधनों की उपलब्धता होना।
5. सरकार के द्वारा अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान हो।
6. सकरार के द्वारा हिलाओं के कामकाज को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और समाज के द्वारा सम्मान भी दिया जाना चाहिए।
7. सरकार द्वारा ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि महिलाऐं आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामचन्द्र गुहा0 उमर उजाला, 4 जनवरी, 2015.
2. डॉ0 कृष्ण चन्द्र चौधरी, कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2015.
3. वही, पृ0सं0 58.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/08

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अर्चना पांडेय एवं डॉ. शोभा गिल

For publication of research paper title

"वर्तमान समाज में महिलाओं की भौतिक एवं व्यावहारिक स्थिति"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com